आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनेप प्राधिकरण
JNPA

सागरमाला
पत्तन आधारित समृद्धि

अभिव्यक्ति

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की गृह पत्रिका

अंक - 38

राजभाषा हीरक जयंती

दिसंबर - 2024

हिन्दी पखवाड़ा विशेषांक

हमारे पत्तन में हिन्दी प्रशिक्षण की गतिविधियाँ

हिन्दी टंकण पर कार्यशाला का आयोजन एवम् अभ्यास सत्र

दीर्घकालिक हिन्दी टंकण प्रशिक्षण योजना में विशेष प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण श्रीमती अनिता तांडेल, आशुलिपिक

डा. मिलिन्द भोस्कर द्वारा सुरक्षा प्रबंधन पर हिन्दी में प्रेजेन्टेशन द्वारा प्रशिक्षण का आयोजन

संरक्षक
श्री उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से.
अध्यक्ष

श्रीमती मनीषा जाधव
महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव
तथा राजभाषा अधिकारी

मुख्य संपादक
विनय बहादुर मल्ल
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
परितोष निगम
संजय राजाराम पाटिल
मनोहर जनार्दन म्हात्रे

रचनाकारों से अनुरोध
अभिव्यक्ति पत्रिका के लिए आप की रचनाऐं निम्नलिखित पते पर आमंत्रित हैं -

राजभाषा अनुभाग, प्रशासन विभाग,
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण,
शेवा, नवी मुंबई - 400707
E mail : hindicell@jnport.gov.in

विषय सूची

क्रम. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	अध्यक्ष महोदय का संदेश	02
2	सम्पादकीय	03
3	समुद्री नाव दुर्घटना	04
4	जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण में स्वास्थ्य जाँच शिविर	07
5	सिडको - जेएनपीए बहु कौशल विकास केंद्र	11
6	कविता - भारत माँ के लाल	15
7	जेम सरकारी कार्यालयों के लिए ई-मार्केटप्लेस	16
8	गठिया-रोग-आर्थ्राइटिस /जॉइन्ट रिप्लेसमेंट	19
9	राजभाषा हिंदी: आज भी जारी है स्वीकृति का संघर्ष	23
10	कहानी - बेटा हो तो ऐसा	26
11	कविता - जवाहरलाल नेहरू पोर्ट की महानता	28
12	कंप्यूटर या सूचना तकनीक का दैनिक जीवन में प्रयोग	29
13	हिन्दी पखवाड़ा – 2024 की प्रमुख झलकियाँ	32
14	हिन्दी पखवाड़ा 2024 प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची	35
15	शब्दकोश	38
16	कविता – कमाई	40

अस्वीकरण : अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री में लेखकों ने अपने व्यक्तिगत विचार प्रस्तुत किए हैं। जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत लेखों और कविताओं के रचनाकार अपने कॉपीराइट के लिए स्वयं जिम्मेदार रहेंगे। अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री का किसी भी अन्य रूप में प्रयोग करने से पूर्व संपादक मंडल से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

– संपादक

अध्यक्ष महोदय का संदेश

मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि अभिव्यक्ति का 38 वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण (जेएनपीए) के कर्मचारियों की सृजनात्मकता का प्रमाण है, बल्कि यह हमारे विचारों, उपलब्धियों और राजभाषा विकास के प्रति समर्पण का एक प्रतिबिंब भी है। यह हमारे संगठन की प्रगति, नवाचार और सामूहिक प्रयासों का दस्तावेज भी है।

वर्ष 2024 कई चुनौतियों और उपलब्धियों से भरा रहा। जेएनपीए ने अपनी परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के साथ-साथ अपने अन्य दायित्वों का भी उत्कृष्ट निर्वहन किया। जेएनपीए ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत अनेक विकास कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, साथ ही समुद्री सुरक्षा को और अधिक मजबूत करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

आज, जेएनपीए न केवल देश का प्रमुख पत्तन है, बल्कि यह नवाचार, हरित ऊर्जा, डिजिटलीकरण और कुशल लॉजिस्टिक्स के क्षेत्रों में भी नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हम अपने बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ कर रहे हैं, स्मार्ट पोर्ट पहल के तहत नई तकनीकों को अपना रहे हैं और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। मुझे यह व्यक्त करते हुए भी गर्वान्वित महसूस होता है कि वाढ़वण महापत्तन का विकास भी हमारे पत्तन की देख-रेख में संतोषप्रद गति से आगे बढ़ रहा है।

अभिव्यक्ति सिर्फ एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे संगठन के राजभाषा के प्रचार – प्रसार के प्रति ऊर्जावान योगदान, प्रतिबद्धता और सतत विकास का प्रतीक है। हमारे कार्मिकों और अधिकारियों की साहित्यिक सृजनात्मक क्षमता के विकास में, यह पत्रिका निश्चय ही मील का पत्थर साबित होगी।

उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से.
अध्यक्ष
जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण

सम्पादकीय

आदरणीय वरिष्ठजनों एवं प्रिय सहकर्मियों,

हमारी गृह पत्रिका अभिव्यक्ति के पिछले अंकों ने हमारे पत्तन के सभी हिन्दी प्रेमियों को उत्साहित एवं रोमांचित कर दिया है। प्रत्येक विभाग से अब रचनाकार अपनी रचनाऐं पत्रिका के संकलन के लिए भेज रहे हैं। आपकी रचनाओं को संकलित कर पत्रिका के 38 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए, मैं अपार हर्ष की अनुभूति कर रहा हूँ।

इस अंक में, हम न केवल हमारे कर्मचारियों के अनुभवों, रचनात्मक अभिव्यक्तियों और साहित्यिक विचारों को साझा कर रहे हैं बल्कि पिछली छमाही की प्रमुख गतिविधियों पर भी प्रकाश डाल रहे हैं। पत्तन में हिन्दी पखवाड़ा और नियमित कार्यशालाओं में पत्तन कार्मिकों की सक्रिय सहभागिता मुझे आनंदित करती है। राजभाषा संबन्धी गतिविधियों में, आपकी सहभागिता हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है। सशक्त भाषा एक राष्ट्र की प्रगति में निर्णायक भूमिका अदा करती है। हिंदी का प्रचार प्रसार करके ही हम अपने विशाल देश के सभी नागरिकों को एक दूसरे के समीप ला सकते हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा गुजरात से असम तक की सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता को पार करके एक होने में, हिन्दी भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और भविष्य में भी यह इसी तरह अग्रसर रहेगी।

मुझे विश्वास है कि आप इस अंक का आनंद लेंगे एवं इसे और अधिक बेहतर बनाने में हमारा सहयोग करेंगे। अभिव्यक्ति का यह अंक निश्चय ही अन्य पाठकों को प्रेरित करेगा और हमारी सामूहिक उपलब्धियों पर गर्व करने का अवसर देगा। यह पत्रिका सशक्त राजभाषा के विकास द्वारा राष्ट्र निर्माण में आपकी भूमिका को और अधिक प्रखर करेगी। मैं सभी कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका को अपने विचारों और रचनात्मकता से आगे भी समृद्ध करते रहें। अध्यक्ष महोदय, महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव, संपादक मंडल के समस्त सदस्यों तथा सभी रचनाकारों के प्रति, मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद,
जय हिन्द......

–विनय बहादुर मल्ल
प्रबंधक (राजभाषा)

समुद्री नाव दुर्घटना

– श्रीमती मनिषा जाधव
महा प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव

18 दिसंबर 2024 को मुंबई में गेटवे ऑफ इन्डिया और ऐलीफेन्टा द्वीप के बीच एक दु:खद नाव दुर्घटना घटी, जिसमें 'नीलकमल' नामक एक समुद्री नाव डूब गई। यह नाव निजी प्रचालकों द्वारा चलायी जाती थी तथा इसके प्रचालन पर जेएनपीए का नियंत्रण नहीं था। इस नाव पर उसकी क्षमता से अधिक यात्री सवार थे।

दुर्घटना के तुरंत बाद, भारतीय नौसेना, तटरक्षक बल, मरीन पुलिस, जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण (जेएनपीए) और स्थानीय मछुआरों ने संयुक्त रूप से बचाव अभियान शुरू किया। बचाव अभियान में नौसेना की 11 नावें, मरीन पुलिस की 3 नावें, तटरक्षक बल की एक नाव और चार हेलीकॉप्टर शामिल थे। इस दुर्घटना की सूचना मिलते ही जेएनपीए ने एक सुनियोजित बचाव अभियान, बिना किसी देरी के प्रारम्भ किया। हमारे समुद्री विभाग के बचाव कर्मी, पायलट और केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के कार्मिक; घटना स्थल पर कुछ ही समय में पहुँच गये तथा बचाव अभियान में तन-मन से लग गये। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि घटना स्थल के आस-पास के मछुआरों, नाव चालकों तथा कर्मियों ने भी -जान लगाकर बचाव अभियान में सहयोग किया।

यह दु:खद त्रासदी हो चुकी थी और अब समय था इसके दु:खद परिणामों को कम करने का। बचाये गये घायलों की अधिकतम सहायता करने के लिए, जेएनपीए प्रबंधन ने दर्जनों बसें जेएनपीए लैन्डिंग जेट्टी (समुद्री घाट) पर खड़ी करवा दी ताकि जो भी घायल जेट्टी तक पहुँचे, उन्हें शीघ्रतीशीघ्र चिकित्सीय सहायता, भोजन एवं अन्य राहत सामग्री दी जा सके। जेएनपीए अस्पताल में कार्यरत डॉक्टरों, नर्स एवं अन्य सभी कर्मियों ने कन्धे से कन्धा मिलाते हुए, सभी बचाये गये यात्रियों को आवश्यक सुविधाऐं दीं। जेएनपीए के कार्मिकों, पुलिस बल एवं बचाव अभियान में लगे हुए प्रत्येक व्यक्ति की समर्पित सेवा भावना के कारण ही 99 से अधिक यात्रियों को बचाया जा सका। सिर्फ मैं ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता उनके अमूल्य योगदान के प्रति आभार व्यक्त करती है।

जेएनपीए के कर्मचारियों ने भी इस बचाव अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी नावों और उपकरणों के माध्यम से बचाव कार्यों में सहयोग किया, जिससे कई यात्रियों की जान बचाई जा सकी। स्थानीय मछुआरों ने भी अपनी नावों के साथ तत्काल सहायता प्रदान की, जिससे बचाव कार्यों में तेजी आई।

जेएनपीए अस्पताल में हमारे पत्तन के ट्रस्टी, डॉक्टर, नर्स एवं अन्य कर्मी घायलों की देखभाल करते हुए

हालांकि, इस हादसे में 13 लोगों की जान चली गई, जिनमें नौसेना के एक कर्मचारी और दो अन्य शामिल थे। नाव दुर्घटना के दौरान हमारे बचाव दल, कर्मचारियों और सहयोगी संगठनों ने जिस तत्परता और साहस का परिचय दिया, वह अत्यंत सराहनीय है। इस आपदा के दौरान हमने एकजुटता, समर्पण और सेवा भाव का

परिचय दिया, जिससे कई अनमोल जीवन बचाए जा सके। हमारी सबसे बड़ी शक्ति हमारा समर्पित और कर्मठ कार्यबल है। भारत की आंतरिक सुरक्षा, शांति और समृद्धि सुनिश्चित करना हम सभी का परम कर्तव्य है। इस घटना के बाद महाराष्ट्र सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने, आपदा प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाने और आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। अभी यह सुनिश्चित किया जाता है कि समुद्री नाव के प्रत्येक यात्री के पास सुरक्षा जैकेट अवश्य हो तथा किसी भी नाव पर उसकी क्षमता से अधिक यात्री सवार नहीं हों।

इस घटना ने समुद्री यात्रा के दौरान सुरक्षा मानकों के पालन की आवश्यकता को उजागर किया है, ताकि भविष्य में इस प्रकार की त्रासदियों से बचा जा सके। इस दुर्घटना के घटित होने का मुख्य कारण यह पाया गया कि नौ सेना की एक उच्च गति की स्पीड बोट का ट्रायल रन 'नील कमल' नामक समुद्री नाव के आस-पास ही हो रहा था। दुर्भाग्यवश, ट्रायल रन के दौरान स्पीड बोट का इंजन अनियंत्रित हो गया तथा अन्ततः वह 'नील कमल' समुद्री नाव से टकरा गई। इस प्रकार के ट्रायल रन एक व्यस्त समुद्री मार्ग पर नहीं होने चाहिये थे। अब समुद्री पुलिस इसका विशेष ध्यान रखती है। इस दुर्घटना में मृत लोगों के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ तथा आशा करती हूँ कि देश के प्रत्येक हिस्से में सभी जलमार्ग सुरक्षित हों तथा सभी सुरक्षा मापदंडों का सख्ती से पालन हो।

*************************** जय हिन्द / जय महाराष्ट्र ***************************

कैप्टन अनमोल कुमार श्रीवास्तव तथा उनके सहकर्मियों ने बचाव अभियान में प्रशंसनीय भूमिका निभाई। जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण की तरफ से उन्हें हार्दिक धन्यवाद।

जेएनपीए में स्वास्थ्य जांच शिविर

डॉ. वर्षा यादव
प्र वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी

स्वास्थ्य-जांच या चिकित्सा शिविर का आयोजन: वंचित समुदाय के बीच स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा आमतौर पर चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाते हैं। समाज के गरीब-वंचित किसान मजदूर लोग मुफ्त जांच और इलाज पाने के लिए इन शिविरों में आते हैं । कोविड़ महामारी ने देश के हर एक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग और जागरूक बना दिया है । इसीलिए आज बड़े-बड़े अस्पताल, गैर सरकारी संगठन (एन जी ओ), सामाजिक विकास समूह चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन करते हैं।

जेएनपीए में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन: पिछले वर्ष एमपीसीटी अस्पताल नवी मुंबई द्वारा जेएनपीए अस्पताल में स्वास्थ्य चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया था जिसका जेएनपीए परिसर के करीब 200 जरूरतमंद लोग, जेएनपीए नगरशेत्र के रहिवासियों ने लाभ उठाया। इस स्वास्थ्य जांच शिविर का उद्घाटन महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव श्रीमती मनीषा जाधव और जेएनपीए की वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर श्रीमती वर्षा यादव जी के करकमलों से हुआ । इस जांच शिविर के आयोजन को सफल बनाने में जेएनपीए अस्पताल के सभी वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी, डॉक्टर्स, नर्सिंग स्टाफ का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

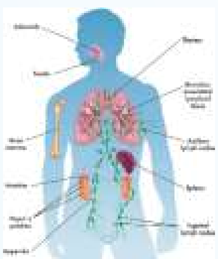

स्वास्थ्य जांच शिविर का लक्ष्य? स्वास्थ्य जांच शिविर मुख्य रूप से बच्चों, महिलाओं, नौकरी-पेशा करने वालों, वृद्ध लोगों में देखी जाने वाली कुछ प्रमुख प्रचलित बीमारियों को पता करने के लिए आयोजित किया जाता है । उदाहरण के लिए बीपी, रक्त में बढ़ता कॉलेस्ट्रोल, शुगर, हृदय विकार, ब्रेन स्ट्रोक, किडनी विकार, पेशाब की बीमारी, आँख और कान की बीमारियाँ आदि के लिए कुछ प्रमुख प्राथमिक जाँच और इन बीमारियों के बारें में जानकारी और जागरूकता लाना ही स्वास्थ्य शिविर मुख्य लक्ष्य होता है।

स्वास्थ्य जांच शिविरों के प्रकार:

- Ø महिलाओं का स्वास्थ्य और कैंसर स्क्रीनिंग शिविर
- Ø बच्चों के स्वास्थ्य / टीकाकरण शिविर
- Ø हृदय / मधुमेह और उच्च रक्तचाप शिविर
- Ø ई.एन.टी. / नेत्र शिविर
- Ø आर्थोपेडिक स्पाइन शिविर(रीढ़ की हड्डी के विकार)
- Ø डेक्सा स्कैन/ऑस्टियोपोरोसिस स्क्रीनिंग शिविर
- Ø दंत चिकित्सा शिविर

महिलाओं के स्वास्थ्य और कैंसर स्क्रीनिंग शिविर का लक्ष्य: आम तौर पर ये देखा गया है कि, महिलाएं अपने स्वास्थ्य को जरा अनदेखा करती है। कुपोषित आहार, अधिक काम, कम नींद, गर्भधारना, स्तनपान, बच्चों के संगोपन में ज्यादातर महिलाओं का स्वास्थ्य कहीं पीछे छूट जाता है और अब तो महिलाएं घर-बच्चे संभालकर नौकरी-पेशा-व्यवसाय भी करती नजर आ रही हैं। इन्ही वजहों से महिलाएं कई बीमारियों का शिकार बनती नजर आती हैं, जैसे रक्ताल्पता, ऑस्टियोपोरोसिस, बदन दर्द,थकान-कमजोरी,मधुमेह, उच्च रक्तचाप,मोटापा,मानसिक विकार,स्तन - सर्विकल कैंसर। महिलाओं के स्वास्थ्य और कैंसर स्क्रीनिंग शिविर में 40 साल से 60 साल की उम्र की महिलाओं में मैमोग्राफी, पैप स्मीयर, ब्लड-शुगर, ब्लड-प्रेशर, आंखों की रोशनी और हड्डियों के घनत्व(डेक्सा स्कैन) जैसे विभिन्न परीक्षण के साथ स्त्री रोग विशेषज्ञ से चिकित्सीय परामर्श किए जाते हैं। इन शिविरों से महिलाओं में कैंसर, हॉर्मोनल इम्बैलन्स, अनेमीया, ऑस्टियोपोरोसिस पर जानकारी से और समय पर इलाज से कई महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार तथा जान का खतरा टाला जा सकता है।

कैंसर जांच शिविर: इंडियन कैंसर सोसाइटी के *मुताबिक "यदि कैंसर स्क्रीनिंग से किसी कैंसर जैसी संभावना का पता जल्द चल जाए तो कई कैंसरों का इलाज संभव है।"* देखा जाए तो पुरुषों और स्त्रियों में कुछ एक कैंसर प्रमुख रूप में पाए जाते हैं और वे कैंसर स्क्रीनिंग और रक्त की कुछ जाँचों(CBC,AFP, CA125-15-19, PSA,) से आसानी से पता किए जा सकते हैं। कैंसर के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन खराब जीवन-शैली, तंबाखू, गुटखा, धूम्रपान, शराब की लत, असुरक्षित यौन संबंध, आनुवंशिकता प्रमुख हैं। कैंसर जांच शिविरों में चार्ट में बताए चिकित्सीय परीक्षण आम तौर पर किए जाते हैं।

कैंसर प्रकार	कैंसर स्क्रीनिंग जाँचे
स्तन कैंसर	सोनो-मैमोग्राफी
सर्विकल (गर्भ-मुख) कैंसर	पेप -स्मीअर
फेफड़ों का कैंसर	छाती की एक्सरे
कोलोन- आतों का कैंसर	सोनोग्राफी
प्रोस्टेट कैंसर	रक्त में PSA स्तर

मधुमेह जांच एवं जागरूकता शिविर : इस शिविर में खाली पेट और खाने के 2 घंटे बाद रक्त में ग्लूकोस की मात्रा, वजन, HBA1c, पेशाब में ग्लूकोस , BP, विशेषज्ञों द्वारा चिकित्सीय परीक्षण, परामर्श शामिल होता है। देखा जाए तो मधुमेह के लिए- शारीरिक गतिविधि का अभाव, मोटापा, उच्च रक्त चाप के साथ हाई कोलेस्ट्रॉल या ट्राइग्लिसराइड्स, महिलाओं में PCOD, कम नींद, तनाव, आनुवंशिकता जैसे कुछ कारण प्रमुख हैं।

तनाव प्रबंधन शिविर: जनवरी 2025 में डॉ. वर्षा यादव और मनोवैज्ञानिक श्रीमती सुषमा ने जेएनपीए में कार्यरत महिला कर्मचारियों के लिए तनाव प्रबंधन पर शिविर का आयोजन किया था जिसमें कर्मचारियों को तनाव, चिंता, क्रोध और अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याओं से निजात के लिए उपाय जैसे ध्यान, योग, गहरी साँस लेना, अच्छी गहरी नींद, पौष्टिक आहार और अच्छी जीवन शैली समझाई गई।

हृदय स्वास्थ्य शिविर: इस शिविर में वजन, BP, ECG, 2-D-Echo, रक्त में कोलेस्टेरॉल के साथ हार्ट स्पेशलिस्ट का परामर्श शामिल होता है। यह शिविर खास कर उन लोगों के लिए होता है जो बढ़ती उम्र, छाती में दर्द, घबराहट, थकान, सांस लेने में कठिनाई, सूजे हुए पैर जैसे विकारों से ग्रस्त होते हैं।

लिवर स्वास्थ्य जांच शिविर फरवरी 2025 में जेएनपीए अस्पताल ने जेन मल्टी स्पेशियलटी चेंबूर के साथ मिलकर जेएनपीए और आसपास के लोगों के लिए लिवर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जिस में लिवर फईबर स्कैन के साथ हेपेटाइटिस B और C की डायग्नोस्टिक जाँचे की गई और इस कैम्प में लगभग 58 लोगों ने भाग लिया। लिवर जांच शिविर से लिवर में फाइब्रोसिस, सूजन और पित्त या रक्त प्रवाह में बदलाव जैसे समग्र परिवर्तन देखें जा सकते हैं।

बच्चों के स्वास्थ्य / टीकाकरण शिविर: महाराष्ट्र राज्य महिला एवं बाल विकास विभाग और एकीकृत बाल विकास सेवा योजना (ICDS)- उरण प्रभाग अंतर्गत उरण तालुका के कुपोषित और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए मासिक निदान और चिकित्सीय शिविर (जो महामारी के कारण रोक दिए गए थे) जेएनपीए अस्पताल के बाल रोग विशेषज्ञ (वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर प्रशांत केलकर जी ने 14 नवंबर (बाल दिवस) 2022 से फिर से शुरू कर दिया है, जिस से जेएनपीए पत्तन के आस-पास के गाँव के गरीब पिछड़े वर्गों के परिवारों के बच्चों को लाभ हो रहा है। जेएनपीए अस्पताल में हर माह एक साल के नवजात बच्चों के लिए टीकाकरण और वेल बेबी क्लिनिक भी चलाया जाता है।

दंत चिकित्सा शिविर दंत चिकित्सा शिविर में दंत चिकित्सकों द्वारा दांतों और मुंह के स्वास्थ्य की जांच की जाती है। दांतों की उचित देखभाल और मुंह के स्वास्थ्य की शिक्षा भी दी जाती है। जेएनपीए अस्पताल के दंत शल्य विशेषज्ञ (प्रभारी वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी) डॉ. वर्षा यादव हर वर्ष जेएनपीए पत्तन विद्यालयों के बच्चों के लिए नवी मुंबई के डी. वाई. पाटील अस्पताल के दंत विभाग के साथ मिलकर दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन करती आयी है।

स्वास्थ्य जांच शिविर ध्येय: स्वास्थ्य का अधिकार किसी भी देश में प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। निस्संदेह अच्छा स्वास्थ्य सबसे बड़ा खजाना है। स्वास्थ्य की देखभाल में कोई भी लापरवाही किसी को भी मौत की ओर ले जा सकती है। कोविड महामारी के बाद बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान स्वास्थ्य के महत्व की ओर बढ़ने लगा है। इसी कारण से आज हर कोई, चाहे वह गरीब हो या अमीर, नौकरीपेशा हो या उद्यमी, विभिन्न स्वास्थ्य जांच शिविरों की ओर आकर्षित हो रहा है। जेएनपीए अस्पताल के वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी होने के नाते मैं डॉ. वर्षा यादव यह वादा करती हूँ, कि आने वाले समय में जेएनपीए अस्पताल अपनी पूरी मेडिकल टीम के साथ विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने का प्रयास करेगी।

*************************** जय हिन्द/ जय भारत ***************************

जेएनपीए-सिडको-ऑलकार्गो कौशल केंद्र

सिडको-जेएनपीए बहु कौशल विकास केंद्र

श्री भरत मढवी
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक)

कौशल और ज्ञान वास्तव में किसी भी देश में आर्थिक विकास और सामाजिक विकास के पीछे प्रेरक शक्तियाँ हैं। भारत का जनसांख्यिकीय लाभ, इसकी 54% से अधिक आबादी 25 वर्ष से कम आयु की है और 62% से अधिक 15-59 वर्ष के कामकाजी आयु वर्ग में है, देश के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह लाभ केवल 2040 तक रहने का अनुमान है, क्योंकि अगले दशक में जनसंख्या पिरामिड 15-59 आयु समूहों में बढ़ने की उम्मीद है। यह सीमित समय सीमा भारत के लिए अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का प्रभावी ढंग से दोहन करने और कौशल की कमी को दूर करने की तात्कालिकता पर जोर देती है।

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (जिसे पहले कौशल विकास और उद्यमिता विभाग के नाम से जाना जाता था) की स्थापना मिशन-उन्मुख दृष्टिकोण में 'कौशल भारत' एजेंडा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से नवंबर 2014 में की गई थी।

लॉजिस्टिक्स सेक्टर के बारे में: यह अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2024 तक कुल कार्यबल मौजूदा 21 मिलियन से बढ़कर 31 मिलियन से अधिक हो जाएगा। इसका मतलब है कि यह क्षेत्र अकेले सभी मॉडलों-सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और विमानन में 9 मिलियन से अधिक लोगों की अतिरिक्त आवश्यकताऐं उत्पन्न करेगा। प्रशिक्षण संस्थानों और लॉजिस्टिक फर्मों सहित सरकार और संबंधित हितधारकों को क्षेत्र की बढ़ती प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी प्रशिक्षण क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता होगी।

एक कौशल प्रशिक्षण पहल: राष्ट्रीय कौशल मिशन का समर्थन करने के लिए, जेएनपीए-सिडको-ऑलकार्गो ने कौशल भारत मिशन के तहत सितंबर 2019 में समुद्री रसद और बंदरगाह क्षेत्र कौशल विकास के लिए प्रधान मंत्री कौशल केंद्र (पीएमकेके) के संचालन के लिए समझौता ज्ञापन में प्रवेश किया।

लॉजिस्टिक्स प्रशिक्षण के लिए "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर":

1. बंदरगाह और समुद्री रसद के लिए प्रशिक्षण क्षमता विकसित करने के लिए, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के साथ साझेदारी में पोत परिवहन मंत्रालय; प्रमुख बंदरगाहों पर एमएसडीई के प्रधान मंत्री कौशल केंद्र (पीएमकेके) कार्यक्रम के तहत समुद्री रसद में बहु कौशल विकास केंद्र (एमएसडीसी) स्थापित कर रहा है।

2. "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर" एक पीपीपी मॉडल समुद्री रसद, बंदरगाह उपयोगकर्ताओं, हवाई अड्डे और अन्य उद्योगों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न विषयों में उपयुक्त कुशल कार्यबल बनाने के लिए मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर (एमएसडीसी) में बेरोजगार युवाओं, सिडको और जेएनपीए के परियोजना प्रभावित व्यक्तियों और वंचित वर्गों, आदिवासी, विशेष रूप से विकलांग, महिलाओं के अन्य युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने को बढ़ावा देता है।

3. ऐसे कौशल केंद्र का 8 मार्च 2019 को पोत परिवहन, सड़क परिवहन और राजमार्ग, जल संसाधन और गंगा संरक्षण मंत्री श्री नितिन गडकरी द्वारा ई-उद्घाटन किया गया था।

4. "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर" न केवल कौशल प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है, बल्कि अन्य संगठन के कर्मचारियों के पूर्व-शिक्षण और प्रशिक्षण के अपस्किलिंग, रीस्किलिंग और मान्यता पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

3 वर्षों के बाद, "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर" ने स्किलिंग बास्केट में मांग के अनुसार नया पाठ्यक्रम जोड़ा है;

- **खेप बुकिंग सहायक**
- **खेप ट्रैकिंग कार्यकारी**
- **इन्वेंटरी क्लर्क**
- **दस्तावेज़ीकरण सहायक**
- **भारी वाणिज्यिक वाहन चालक**
- **भारी वाहन चालक**
- **भंडार निरीक्षक**
- **गोदाम कार्यकारी प्रेषण और रसीदें**
- **डाटा एंट्री ऑपरेटर**
- **सहायक सौंदर्य चिकित्सक**
- **लेखा कार्यकारी**

5. केंद्र यह सुनिश्चित करता है कि हमारे सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम और इसका कार्यान्वयन सरकारी प्रोटोकॉल और उद्योग की जरूरतों के अनुरूप हो। कौशल विकास कार्यक्रमों में न केवल सिद्धांत शामिल हैं बल्कि विभिन्न व्यावहारिक हस्तक्षेप भी शामिल हैं जिन्हें हम अपने प्रशिक्षुओं को वर्तमान प्रवृत्ति से निपटने और वास्तविक वातावरण का अनुभव प्रदान करने में सहायता करने के लिए शामिल करते हैं।

6. हम उद्योग विशेषज्ञों, विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा अतिथि व्याख्यान, जेएनपीए, गोदामों और कॉर्पोरेट कार्यालयों में औद्योगिक दौरों की व्यवस्था करते हैं ताकि हमारे प्रशिक्षुओं को वास्तविक दुनिया का अनुभव हो सके और वे पेशेवर गुणों का अनुभव कर सकें।

7. हम खेल, प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद, गतिविधि आधारित शिक्षण सत्र, वाद-विवाद और समूह चर्चा जैसी घरेलू गतिविधियों का भी आयोजन करते हैं जो प्रशिक्षुओं के बीच समूह में या व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के लिए आवश्यक है और विभिन्न व्यक्तिगत कौशल को बढ़ावा देते हैं।

8. इस तरह के हस्तक्षेप से प्रशिक्षुओं के लिए एक मजबूत नींव बनाने, आत्म-सम्मान, आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल बनाने में मदद मिलती है। यह समस्या-समाधान कौशल और सहयोग विकसित करता है। यह प्रशिक्षुओं को स्वतंत्र विचारक बनने में मदद करता है और उन्हें अपने भविष्य के लिए योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, इस प्रकार कौशल विकास का अंतिम लक्ष्य प्राप्त होता है।

9. हम नए भारत के निर्माण की विकास प्रक्रिया में योगदान देने में सक्षम हो रहे हैं और कौशल भारत मिशन का समर्थन करने के लिए कुशल कार्यबल तैयार करने का हिस्सा बन रहे हैं।

10. कौशल केंद्र के लिए यह एक गर्व का क्षण था जब, जेएन पोर्ट अवार्ड्स मई 2023 में पीएमकेवीवाई के तहत "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर" के सुचारू और कुशल संचालन के लिए एक विशेष मान्यता देते हुए सम्मानित किया। यह पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि श्री सर्बानंद सोनोवाल, माननीय केंद्रीय बंदरगाह, पोत परिवहन और जलमार्ग और आयुष मंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

11. "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर" के तहत 2019 से शुरू होकर पिछले 5 वर्षों में विभिन्न धाराओं में 3000 से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया और पीएमकेवीवाई, सीएसआर और विभिन्न योजनाओं के तहत 1800 से अधिक युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान किए।

एमएसडीसी में कौशल प्रक्रिया : युवा कौशल विकास के लिए "जेएनपीए सिडको मल्टी स्किल डेवलपमेंट सेंटर" (एमएसडीसी) में की गई गतिविधियों की सूची :

• मांग-संचालित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम : हमारे दृष्टिकोण में मांग-आधारित प्रशिक्षण शामिल है, जहां उद्योग की जरूरतों के आधार पर पाठ्यक्रमों का सावधानीपूर्वक चयन किया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि हमारे कौशल प्रयास वर्तमान बाजार आवश्यकताओं के अनुरूप हैं, जिससे युवाओं को पेशेवर सफलता के लिए व्यावहारिक और प्रासंगिक कौशल प्रदान किया जा सके।

• अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (एसटीटी): इन कार्यक्रमों को प्रतिभागियों को एक संक्षिप्त समय सीमा (3 महीने में व्यावहारिक, नौकरी के लिए तैयार कौशल से लैस करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे उनकी रोजगार क्षमता, अपस्किल और पेशेवर भूमिकाओं के लिए तैयारी में वृद्धि होती है।

• सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण : गतिविधि-आधारित सत्र पेशेवर सफलता के लिए संचार और टीम वर्क को बढ़ाते हैं।

• डिजिटल साक्षरता कार्यशालाऐं : युवाओं को डिजिटल युग के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल पर ध्यान केंद्रित करने वाले कार्यक्रम।

• औद्योगिक दौरे : कार्यस्थल की गतिशीलता में व्यावहारिक प्रदर्शन और अंतर्दृष्टि के लिए उद्योगों के दौरे आयोजित किए गए।

• अतिथि व्याख्यान : छात्रों के ज्ञान को व्यापक बनाने के लिए प्रासंगिक विषयों पर प्रसिद्ध पेशेवर व्याख्यान देते हैं।

• आयोजन और रोजगार मेले में भागीदारी के माध्यम से नेटवर्किंग और कैरियर अन्वेषण को प्रोत्साहित करना।

• इंटर्नशिप के अवसर : युवाओं को पेशेवर वातावरण के लिए तैयार करने के लिए इंटर्नशिप के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना।

• कैरियर परामर्श सत्र : छात्रों को कैरियर विकल्प चुनने और उनके भविष्य की योजना बनाने में मदद करने के लिए व्यक्तिगत मार्गदर्शन।

• कौशल-आधारित कार्यशालाऐं : नेतृत्व, समय प्रबंधन और वित्तीय साक्षरता जैसे विशिष्ट कौशल पर ध्यान केंद्रित करने वाली कार्यशालाऐं।

• उद्योग प्रमाणन कार्यक्रम : ऐसे पाठ्यक्रमों की पेशकश जो विभिन्न उद्योगों में मान्यता प्राप्त प्रमाणन की ओर ले जाते हैं।

• प्रमाणपत्र वितरण कार्यक्रम : प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर, छात्रों को मूल्यांकन से गुजरना पड़ता है। मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने वालों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

• प्लेसमेंट ड्राइव : अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के अलावा, हम छात्रों को नौकरी के लिए साक्षात्कार के लिए तैयार करते हैं। एक बार प्रशिक्षण पूरा हो जाने के बाद, हम एक प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन करते हैं जो हमारे सभी पूर्व छात्रों और विभिन्न कंपनियों को एक साथ लाता है, जिससे उन्हें ऐसे उम्मीदवारों का चयन करने की अनुमति मिलती है जो उनके संगठनों के लिए उपयुक्त हैं।

एमएसडीसी में, हम एक सर्वांगीण शैक्षिक अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो पारंपरिक शिक्षा से परे है, युवाओं को उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता के लिए तैयार करता है।

ये गतिविधियाँ एमएसडीसी में युवाओं के समग्र विकास को समृद्ध करती हैं, मौजूदा कार्यक्रमों को पूरक बनाती हैं और उन्हें उनके भविष्य के प्रयासों के लिए व्यापक रूप से तैयार करती हैं।

भारत माँ के लाल

- श्री संतोष परब,
सहायक प्रबंधक

तपते रेगिस्तान या ठिठुरती ठंड में
अपने घर से दूर, कहीं वो रहता है।
अपनी माँ को छोड़ अकेला
वो, भारत माँ की रक्षा करता है॥

सब रिश्तों का मोह वो त्यागे
अपने दिल पर पत्थर रख कर।
हँसते हँसते जान भी अपनी
भारत भू पर करे न्योछावर ॥

चैन से कभी भी सोता नहीं वो
ताकि हम सुख-सपने बुने।
उसके तो सपनों में भी वो
हमारे लिए खुशहाली ही चुने॥

हम खुशी-खुशी मनाएँ दीवाली
और सतरंगों की खेलते हैं होली।
पर, हे भारत माँ के लाल, तुम्हें तो
दिखे, सिर्फ लाल रंग की "डोली"॥

आँसू भरी आँखों से मुस्काते
आपके घरवाले, "सब ठीक है" कहते हैं।
सीमा पर युद्ध की खबरें पढ़
हम बस, पन्ने पलटकर रहते हैं॥

कितना कड़वा सत्य है, यह कि
आप, प्राणों का वेतन पाते हैं।
और, अनमोल जीवन को अपने
तिरंगों में लपेटकर जाते हैं॥

ऋणी हैं हम हर भारतवासी
आप से ही है भारत में अमन।
नित शीश झुकाता हूँ मैं अपना
हे वीर, करता हूँ तुम्हें,
शतशत नमन, शतशत नमन॥

जेम (GeM) – सरकारी कार्यालयों के लिये ई-मार्केट प्लेस

- श्री गोरक्ष कोल्हे
सहायक प्रबंधक

एक जमाना था जब सरकारी कार्यालयों में कुछ भी सरकारी सामान खरीदने के लिए, सम्बन्धित अधिकारी को स्वयं बाजार जाकर उसका विक्रेता या आपूर्तिकर्ता ढूंढना पड़ता था और फिर उससे बजटरी कोटेशन लेकर ही, आगे की आवश्यक कार्यवाही की जाती थी। हम लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में भी इसी तरह से स्वयं बाजार जाकर, वस्तुऐं खरीदते थे। फिर समय बदला और ऑनलाइन खरीददारी (शॉपिंग) का जमाना आया जिसके फलस्वरूप हम सभी ने अनेक वस्तुऐं ऑनलाइन खरीददारी से खरीदी। हमारी भारत सरकार ने भी वर्ष 2016 में, सरकारी कार्यालयों के लिए ऑनलाइन खरीददारी को सम्भव करने के लिए जेम (GeM) वेबसाइट की शुरुआत की।

सरकारी ई-मार्केटप्लेस जेम (GeM) एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है जो सरकारी संगठनों और विभागों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खरीद को आसान बनाता है। जेम का उद्देश्य सार्वजनिक खरीद में दक्षता, पारदर्शिता, जवाब देही, स्पर्धा और समावेशिता को बढ़ाना है।

मुख्य विशेषताऐं और लाभ : -

01. पारदर्शिता और दक्षता : जेम एक पारदर्शी और कुशल खरीद प्रक्रिया प्रदान करता है, जिससे सरकारी कार्यालय ऑनलाइन सामान और सेवाऐं खरीद सकते हैं।
02. लागत बचत : जेम ने सरकारी कार्यालयों को सामान और सेवाऐं उचित मूल्य पर उपलब्ध करवा करके पैसे बचाने में मदद की है।
03. बड़े बाजार तक पहुँच : जेम विक्रेताओं को सरकारी खरीददारों के पास लाकर बड़े बाजार तक पहुँच प्रदान करता है।
04. समान अवसर : जेम सभी विक्रेताओं के लिए समान अवसर प्रदान करता है, चाहे वे छोटे व्यापारी हों या बड़े, दिल्ली में हों या अरूणाचल प्रदेश में।

05. आसान भुगतान : विक्रेताओं को सरकार द्वारा सीधे भुगतान किया जाता है, जिससे भुगतान न होने का जोखिम समाप्त हो जाता है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि यदि कोई विक्रेता जेम के माध्यम से किसी सरकारी कार्यालय को संतोषजनक गुणवत्ता का सामान उपलब्ध करवाने का कार्य पूरा करता है या सेवाऐं प्रदान करता है तो दो हफ्ते के अन्दर ही उसका भुगतान होना अनिवार्य होता है। इस प्रकार जेम ने ठेकेदारों / विक्रेताओं को त्वरित भुगतान करवाने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है।

परिणाम : अब तक जेम ने ₹1 लाख करोड़ से अधिक मूल्य की वस्तुओं और सेवाओं की खरीद की सुविधा प्रदान की है। अब तक जेम ने प्लेटफ़ॉर्म पर 1.5 लाख से अधिक विक्रेताओं को पंजीकृत किया है। जेम ने सरकारी खरीददारों को ₹10,000 करोड़ से अधिक की बचत करने में मदद की है। जेम सरकारी खरीददारों और विक्रेताओं दोनों के लिए उपयोगी है। खरीददारों के लिए, यह एक पारदर्शी और कुशल खरीद प्रक्रिया प्रदान करता है, जिससे उन्हें ऑनलाइन सामान और सेवाऐं खरीदने की अनुमति मिलती है। विक्रेताओं के लिए, यह सरकारी खरीददारों के एक बड़े बाजार तक पहुँच प्रदान करता है।

पारदर्शिता : जेम ई-बोली (ई-बिडिंग), विपरीत नीलामी (रिवर्स ऑक्शन) और घटना प्रबंधन जैसी सुविधाओं के माध्यम से खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करता है। यह प्लेटफ़ॉर्म विक्रेताओं के लिए एक प्रतिस्पर्धी वातावरण भी प्रदान करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वस्तुओं और सेवाओं के लिए सर्वोत्तम तर्कसंगत मूल्य प्राप्त किए जाऐं।

यह सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जेम), स्टार्टअप्स के लिए सरकारी विभागों और संगठनों को अपने उत्पाद और सेवाऐं बेचने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। स्टार्टअप्स के लिए जेम के कुछ लाभ और विशेषताऐं इस प्रकार हैं :

स्टार्टअप्स के लिए सुविधाऐं :

1. बड़े बाजार तक पहुंच : जेम स्टार्टअप्स को सरकारी खरीददारों के बड़े बाजार तक पहुँच प्रदान करता है, जो उन्हें अपने व्यवसाय को बढ़ाने में मदद करता है।

2. पारदर्शी और कुशल खरीद प्रक्रिया : जेम का ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म एक पारदर्शी और कुशल खरीद प्रक्रिया सुनिश्चित करता है, जो स्टार्टअप्स को सरकारी खरीद प्रक्रिया को अधिक आसानी से प्रयोग करने में मदद कर सकता है।

3. प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण : जेम ई-बिडिंग और विपरीत नीलामी (रिवर्स ऑक्शन) सुविधाऐं भी प्रदान करता है कि स्टार्टअप अन्य विक्रेताओं के साथ समान स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें।

4. जेम स्टार्टअप रनवे : जेम ने स्टार्टअप को सरकारी विभागों और संगठनों को अपने उत्पाद और सेवाऐं बेचने में मदद करने के लिए स्टार्टअप रनवे कार्यक्रम शुरू किया है। इसके अन्तर्गत सभी

सरकारी विभागों एवं संगठनों को स्टार्टअप से खरीद को बढ़ावा देना है तथा सरकारी नीति के अनुसार उन्हें आवश्यक रियायतें भी देना है। जेम में स्टार्टअप के लिए विशेष प्रावधान हैं, जिसमें पूर्व अनुभव और टर्नओवर आवश्यकताओं में उनके लिये छूट शामिल है।

5. मेंटरशिप और सहायता : जेम अपने साझेदार संगठनों के माध्यम से स्टार्टअप को मेंटरशिप और सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार की सहायता स्टार्टअप्स को अपने व्यापार प्रचालन और संवर्धन में सहायक सिद्ध हुई है।

6. जेम स्टार्टअप्स को सरकारी खरीद डेटा तक पहुँच प्रदान करता है, जो उन्हें व्यावसायिक अवसरों की पहचान करने में मदद करता है। जेम की वेबसाइट पर कोई भी व्यवसायी यह सरलतापूर्वक देख सकता है कि किस प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की सरकार द्वारा अधिक खरीद की जाती है। इसे ध्यान में रखते हुए ही व्यवसायी अपने भविष्य की योजनाऐं बनाते हैं।

स्टार्टअप के लिए पात्रता मानदंड :

1. स्टार्टअप को उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा मान्यता प्राप्त होना चाहिए।
2. भारत में निर्मित : स्टार्टअप को भारत में निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देना चाहिए।
3. स्टार्टअप 10 वर्ष से कम पुराना होना चाहिए।
4. स्टार्टअप का वार्षिक कारोबार ₹100 करोड़ से कम होना चाहिए।

कोई व्यवसायी जेम पर पंजीकरण कैसे करे ?

1. जेम वेबसाइट पर जाऐं और "रजिस्टर" बटन पर क्लिक करें।
2. अपने स्टार्टअप के विवरण के साथ पंजीकरण फ़ॉर्म भरें।
3. अपने स्टार्टअप के निगमन प्रमाण पत्र, पैन कार्ड और जीएसटी प्रमाण पत्र सहित आवश्यक दस्तावेज अपलोड करें।
4. जेम द्वारा भेजे गए सत्यापन लिंक पर क्लिक करके अपना ई मेल पता सत्यापित करें।

डा. मिलिंद भोस्कर
चिकित्सा अधिकारी
ज.ने.प. अस्पताल

हाल ही में जेएनपीए के कुछ **कर्मचारियों** और **आश्रित परिजनों** में गठिया रोग **आर्थ्राइटिस** के चलते **हिप रिप्लेसमेंट** सर्जरी के मामले दिखाई पड़े हैं। इसी को देखते हुए, इस लेख में गठिया-रोग-आर्थ्राइटिस /जॉइन्ट रिप्लेसमेंट के बारें में जानकारी देने का यह एक प्रयास है।

क्या है गठिया रोग-आर्थ्राइटिस -? गठिया / आर्थ्राइटिस शरीर के जोड़ों में सूजन और जोड़ों की हड्डियों की चिकनी सतह के घिसने से होने वाले दर्द को कहते हैं। भारत में गठिया रोग काफी आम है, जिसे खासकर 50 से ऊपर वाली उम्र के लोगों में प्रमुख रूप से देखा जाता है। गठिया-आर्थ्राइटिस वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं और बुजुर्गों में जोड़ों में दर्द, सूजन, अकड़न और सीमित गतिशीलता और बहुत बार गंभीर अवस्था में विकलांगता का कारण भी बन सकता है। इसीलिए गठिया/ आर्थ्राइटिस के बारें में जानकारी, जल्द निदान और समय पर इलाज जरूरी बन जाता है।

गठिया रोग-आर्थ्राइटिस के कारण ? बढ़ती उम्र, वृद्धावस्था, हड्डियों में लगी चोट, फ्रैक्चर, संक्रमण, मोटापा, आरामदायक जीवन शैली, कुपोषण, धूम्रपान, आनुवंशिक दोष गठिया रोग का मुख्य कारण है। इन सभी वजहों से जोड़ों की हड्डियों की चिकनी सतह खराब खुरदरी हो जाती है और जोड़ों में सूजन, दर्द, टेढ़ापन उत्पन्न होता है।

गठिया रोग-आर्थ्राइटिस के प्रकार ? गठिया रोग के 100 से ज़्यादा अलग-अलग प्रकार हैं। इनमें से कुछ सबसे आम देखे जाने वाले प्रकार इस प्रकार हैं:

- ऑस्टियोआर्थराइटिस: मोटापे, कुपोषण, हड्डियों में चोटों से जोड़ों की चिकनी सतह खराब होने से ।
- रुमेटाइड आर्थ्राइटिस : असामान्य शरीर प्रतिरक्षा प्रणाली से जोड़ों को खराब करती है ।
- गाउट: यूरिक एसिड क्रिस्टल से जोड़ों की चिकनी सतह खराब होने से।
- सोरियाटिक गठिया: एक चर्म रोग वश जोड़ों की हड्डियाँ खराब होने से ।

- ऐंकिलॉजिंग स्पॉन्डिलाइटिस : असामान्य शारीरिक दशा से रीढ़ और कमर की हड्डी के जोड़ खराब होने से ।

गठिया-आर्थ्राइटिस-के लक्षण और संकेत क्या हैं ?

गठिया के सबसे आम लक्षण और संकेत निम्नलिखित हैं

- जोड़ों का दर्द .
- जोड़ों में सूजन.
- जोड़ों में अकड़न विशेष रूप से सुबह के समय
- जोड़ों की गतिविधि में कमी।

- जोड़ के आसपास की त्वचा का लाल और गर्म होना

गठिया-आर्थ्राइटिस का निदान कैसे?

- चिकित्सीय इतिहास
- शारीरिक / जोड़ों का परीक्षण
- रक्त परीक्षण / रूमटॉइड फैक्टर टेस्ट
- हड्डियों का एक्सरे

- जोड़ों का एम-आर-आई (MRI)
- आरथ्रोस्कोपी (जोड़ों की दूरबीन जांच)

गठिया रोग -आर्थराइटिस का इलाज क्या है? देखा जाए तो गठिया रोग -आर्थराइटिस का वैसे कोई इलाज नहीं है, लेकिन कुछ तरीकों से आप इसे बढ़ने से रोक सकते हैं। मुख्यतः आर्थराइटिस का इलाज दर्द को रोकने और सूजन को कम करने की ओर ज्यादा केंद्रित होत है। सूजन को कम करने से जोड़ में हुई क्षति को रोकने में भी मदद मिल सकती है। जिस से मरीज को आराम मिलता है।

गठिया आर्थ्राइटिस में शामिल इलाज:

- दर्द सूजन प्रतिरोध दवाएं (डॉक्टर की सलाह से ही!)
- जीवन शैली में सुधार-अच्छी नींद
- पौष्टिक आहार का सेवन - खासकर कैल्शिअम और विटामिन-डी

- नियमित व्यायाम और योग-सीढ़िया चढ़ना-उतरना
- वजन नियंत्रण
- धूम्रपान निषेध
- नियमित चिकित्सीय जाँच
- फिज़ीओथेरपी , नी-कैप , बैंड-सपोर्ट

ऐसा देखा गया है कि गठिया रोग के शुरुवाती समय में ऊपर बताए सभी इलाज ज्यादातर वक्त आराम देते हैं । पर जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है और गठिया ग्रसित जोड़ बहुत खराब हो जाता है , तब डॉक्टर आपको ***नी -हिप -रिप्लेसमेंट सर्जरी (जोड़ का प्रतिस्थापन)*** कराने का आखिरी इलाज बताते हैं । जिस में खराब जोड़ की खराब हुई हड्डी को निकाल, उस जगह धातु(टाइटैनीअम) से बनी हड्डी बिठाई जाती है ।

गठिया रोग आर्थ्राइटिस में -नी -हिप -रिप्लेसमेंट-प्रतिस्थापन-क्यूँ ?

- आपके जोड़ों का दर्द बहुत बढ़ जाए - दवाई से भी आराम न मिले ।
- आपके जोड़ों के दर्द और अकड़न से आपकी दैनंदिन गतिविधि में कमी आ जाए।
- आपके जोड़ों के दर्द की वजह से आपको नींद पूरी न मिल सके ।
- सीमित शारीरिक गतिविधि की वजह से आपके सामाजिक और कामकाजी जीवन पर बुरा असर हो जाए ।

गठिया रोग आर्थ्राइटिस में -नी -हिप -रिप्लेसमेंट-प्रतिस्थापन के फायदे?

- दर्द से राहत
- शारीरिक गतिशीलता में सुधार
- आर्थ्राइटिस रोग से उत्पन्न विकलांगता में सुधार
- कामकाजी और सामाजिक जीवन की गुणवत्ता में सुधार

रोबोटिक जोड़ प्रतिस्थापना (जॉइन्ट रिप्लेसमेंट) के फायदे ?

- छोटे चीरे से (की होल) सर्जरी
- सर्जरी के बाद कम दर्द
- रोबोट कंप्यूटर नाप की वजह से अधिक सटीकता
- जॉइन्ट रिप्लेसमेंट के बाद तेजी से रिकवरी
- पारंपरिक सर्जरी के रोबाटिक रिप्लेसमेंट की अच्छी सफलता दर

जोड़ प्रतिस्थापन (जॉइन्ट रिप्लेसमेंट) के बाद ली जाने वाली सावधानियाँ ?

क्या करें	*क्या न करें*
मध्यम गति से चलें	पैर मोड़ना
बताए अनुसार नियमित व्यायाम करें	फर्श पर बैठना
वज़न पर नियंत्रण रखें	भाग -दौड़ करना
वक्त पर दवाइयाँ लें	वजन उठाना
अपने सर्जन से नियमित रूप से मिलें	दर्द को नज़र अंदाज करना
फीजिओथेरेपी और मसाज करें	डॉक्टर से नियमित परामर्श टालना

तो हम ने देखा कि गठिया -आर्थ्राइटिस रोग से ग्रसित व्यक्ति का जीवन कैसे दुख -दर्द, गतिहीनता, विकलांगता से घिर जाता है और कैसे आधुनिक रोबोटिक जॉइन्ट रिप्लेसमेंट सर्जरी द्वारा उस व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है। जेएनपीए में भी कुछ कर्मचरियों ने जॉइन्ट रिप्लेसमेंट सर्जरी से अपने जोड़ों के दर्द से मुक्ति और जीवन में गति के साथ ही फिर से जीने की एक नई आशा पाई है।

____________________*******************____________________

राजभाषा हिंदी: आज भी जारी है स्वीकृति का संघर्ष

परितोष निगम
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

हिन्दी के महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद ने कहा था - "राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है। नदी, पहाड़ और समूह राष्ट्र नहीं बनाते। भाषा ही वह बंधन है, जो चिरकाल तक राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रहती है और इसे बिखरने, विखंडित एवं विभाजित होने से रोकती है।" लेकिन दुर्भाग्य से देश का मानस आज भी इस सत्य को आत्मसात नहीं कर पाया है। भाषा के मुद्दे पर देश में जब-तब विवाद खड़े होते रहते हैं। राजभाषा हिंदी आज भी देश के बहुत से हिस्सों, विशेषकर दक्षिणी क्षेत्रों में अपनी स्वीकृति के लिए संघर्ष कर रही है। इस तथ्य को बारीकी से समझने की जरूरत है कि राष्ट्रभाषा या राजभाषा राष्ट्र-नीति से जुड़ा विषय है न की राजनीति से।

लगभग दो सौ साल की गुलामी झेलने के बाद भी स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा तय करने के मसले पर बहुत से विवाद रहे हैं और आज आजादी के पचहत्तर साल बाद भी इस विषय पर मन-मुटाव और द्वेष की स्थिति बनी हुई है तथा देश का मानस आज भी इतने संवेदनशील मुद्दे पर एकमत होकर पूरी तरह से हिन्दी को स्वीकार नहीं कर पाया है। आजादी से पूर्व हिन्दी ने सारे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो कर रखा था और न सिर्फ हिन्दी भाषी क्षेत्रों के बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के नेता और विद्वान हिन्दी का खुले दिल से समर्थन करते थे, लेकिन आजादी मिलते ही कुछ महानुभावों ने अपने निहित स्वार्थों के चलते उसी हिन्दी का विरोध करना शुरू कर दिया। हिन्दी विरोध की ये चिंगारियाँ आज भी पूरी तरह से बुझी नहीं हैं और राजनैतिक स्वार्थ की हवाओं के चलते जब-तब अपना आक्रामक रूप प्रकट करती दिखलाई पड़ जाती हैं। बीते दिनों दक्षिण में हिंदी विरोध की राजनीति फिर से गरमा गई है।

आइए हिन्दी के राजभाषा बनने की यात्रा की एक छोटी सी झलक लेते हैं। आजादी मिलने के बाद देश की राष्ट्रभाषा और राजभाषा तय करने के लिए देश के राजनेताओं, विद्वानों, भाषाविदों के बीच काफी लम्बे समय तक विचार-विमर्श किया गया। देश के सभी क्षेत्रों से विचारकों व राजनीतिज्ञों ने इस विषय पर अपने विचार रखे।

पुरातनपंथी विचारधारा के कुछ लोग जो देश को उसकी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति से जोड़कर देखते थे, वे संस्कृत को इस पद पर आसीन करना चाहते थे। लेकिन संस्कृत के संबंध में सबसे बड़ी समस्या थी कि यह जटिल व्याकरण वाली एक क्लिष्ट भाषा थी। दूसरे लगभग 35 करोड़ की आबादी वाले इस देश में संस्कृत जानने वाले मुट्ठी भर लोग भी नहीं थे और लगभग 140 करोड़ लोगों के देश में आज भी यह प्रतिशत

नगण्य सा है। संस्कृत के बाद अभिजात्य वर्ग के कुछ तथाकथित लोगों की माँग थी कि अंग्रेजी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया जाए क्योंकि राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों को भली प्रकार से निभाने के साथ-साथ उसमें देश के शैक्षिक क्षेत्र में विकास करने की अपार संभावनाएं हैं। हाँलाकि उस समय देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या 01 प्रतिशत से अधिक नहीं थी। लेकिन किसी भी विदेशी भाषा को यह गौरव प्रदान करना राष्ट्रीय स्वाभिमान के विपरीत था। अंग्रेजों की लगभग दो सौ साल की लम्बी गुलामी के बाद देश आजाद हुआ था तथा उनकी ही भाषा को राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी बनाना किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं था।

राष्ट्रभाषा और राजभाषा निर्धारित करने के लिए बाद में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर विचार किया गया। उस समय की सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं को जानने वालों की संख्या पर एक दृष्टि डाली गई। लेकिन हिन्दी को छोड़कर किसी भी अन्य भारतीय भाषा को जानने वालों का प्रतिशत 10 से अधिक नहीं था। सन् 1951 की जनगणना के आँकड़े बताते हैं कि उस समय भारत में हिन्दी जानने वालों का प्रतिशत 40 से अधिक था जबकि उसके बाद सबसे अधिक तेलुगू जानने वाले 9.24 प्रतिशत थे। साथ ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनाने में यह तर्क भी सबसे महत्वपूर्ण रहा कि अन्य प्रदेशों में भी हिन्दी समझने वालों एवं उसका सामान्य स्तर का ज्ञान रखने वालों का प्रतिशत काफी अधिक था। इसके साथ-साथ देश के बाहर रहने वाले भारतवासी या विदेशी भी जिस भारतीय भाषा का सबसे अधिक ज्ञान रखते थे वह हिन्दी ही थी।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के संबंध में महात्मा गांधी के विचार बहुत ही महत्वपूर्ण रहें हैं। उन्होंने इस भाषा की वकालत करते हुए इसे हिंदुस्तानी कहना बेहतर समझा, क्योंकि इसमें भारत की सभी भाषाओं के शब्द प्रचुरता से मौजूद थे तथा इस बात की अपेक्षा भी थी कि हिन्दी और अधिक उदारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को भी सहजता से स्वीकार करे जिससे भाषा का और सरलीकरण हो सके तथा हिन्दीतर (अहिन्दी) भाषियों को इसे अपनाने में किसी प्रकार की परेशानी न हो। यही नहीं उन्होंने हिन्दी को देवनागरी लिपि के साथ-साथ फारसी लिपि में लिखे जाने की भी हिमायत की थी। उनका मानना था कि जिस लिपि में अधिक शक्ति होगी वह टिकेगी, और वही राष्ट्रीय लिपि होगी। राष्ट्रभाषा या लिपि को लागू करने तथा उसके स्वीकारने के संबंध में गांधी जी ने जिस उदार मन तथा बुद्दिमत्ता का परिचय दिया था वह आज भी राष्ट्रभाषा और राजभाषा के संदर्भ में देश के नीति-निर्धारकों एवं कर्णधारों के लिए एक सबक है।

हिन्दी को सहर्ष रूप से स्वीकार किए जाने के संबंध में यदि हिन्दी की अंग्रेजी से लड़ाई को एक ओर कर दिया जाए तो आज जो सबसे बड़ी चुनौती हमारे सामने है वह है प्रान्तीय भाषाओं के उन लोगों का विरोध जो हिन्दी को अपनी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं के अस्तित्व और विकास के लिए खतरा मानते हैं। हिन्दी को अधिक पढ़ने या बोलने से वे अपनी भाषा या संस्कृति से दूर चले जाएँगे या उनकी अपनी पहचान कहीं गुम हो जाएगी- ऐसा कुछ लोगों का मानना है। लेकिन यह उनका महज एक भ्रम है क्योंकि किसी भी दूसरी भारतीय भाषा या संस्कृति को सीखने से व्यक्ति की अपनी भाषा या संस्कृति भी समृद्ध होती है तथा उसके संस्कार और

भी प्रबुध्द होते हैं। फिर राजभाषा हिन्दी तो वैसे भी संस्कृत से निकली भारोपीय समूह की वह भाषा है जो उन्हें अपने ही देश और उसके लोगों के साथ जोड़कर भारत की आत्मा को और सशक्त बनाएगी।

केंद्र सरकार के द्वारा भी देश की सभी प्रमुख भाषाओं को संरक्षण देने एवं उन्हें समृद्ध बनाने के प्रयास निरन्तर चल रहे हैं। अब तक देश की 22 भाषाओं को संविधान की आठवी अनुसूची में संवैधानिक मान्यता मिल चुकी है तथा कुछ अन्य भाषाओं को भी यह दर्जा दिलाने के प्रयास जारी हैं। क्षेत्रीय भाषाओं एवं बोलियों के विकास एवं संरक्षण के लिए राज्य के पास पर्याप्त शक्तियाँ हैं एवं सभी राज्य इस दिशा में काम कर भी रहे हैं। इसलिए कुछ एक लोगों की यह आशंका पूरी तरह से निराधार है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार से उनकी अपनी क्षेत्रीय भाषा प्रभावित होगी।

जहाँ तक राष्ट्र की विभिन्न भाषाओं के विकास का प्रश्न है सरकार के प्रयासों के साथ-साथ सभी भारतवासियों का भी यह दायित्व बनता है कि वे अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी सीखने का प्रयत्न करें।सभी देशवासी विशेषकर हिंदीभाषी क्षेत्र के लोगों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे राजभाषा संकल्प 1968 में उल्लिखित त्रिभाषा सूत्र की मूल भावना को समझें और वे हिंदी एवं अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा (जिसमें उदारमन से किसी दक्षिण भारतीय भाषा को प्राथमिकता दी जाए) सीखें, जिससे कि हिन्दीतर (अहिन्दी) भाषी क्षेत्र के लोगों को यह कहने का मौका ना मिले कि हिंदी उन पर थोपी जा रही है. इसके साथ-साथ, हिन्दीतर (अहिन्दी) भाषी क्षेत्र के लोगों के लिए भी यह आवश्यक है कि वे हिंदी के अध्ययन से गुरेज न करें और इस तथ्य को स्वीकार करें कि भाषायी और सांस्कृतिक विविधता वाले इस देश में हिंदी संपर्क-भाषा के रूप में एकता की अनिवार्य कड़ी है. देशवासी, सभी भाषाओं विशेषकर भारतीय भाषाओं को सम्मान देते हुये भाषा के नाम पर होने वाले किसी भी भेदभाव या घृणा का डटकर विरोध करें। भाषा संस्कृति और संस्कारों की संवाहक है, समाज की प्रतिनिधि है जो हमेशा जोड़ने का काम करती है तोड़ने का नहीं। विभिन्न भाषाओं को सीखने से सांस्कृतिक और सामाजिक रिश्ते प्रगाढ़ बनते हैं। भाषा के माध्यम से हम एक-दूसरे समाज या संस्कृति की वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, तीज-त्योहारों, विचारों-मान्यताओं को भी जानते हैं जिससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है और हमारी जीवन-शैली में भी बदलाव आता है तथा धीरे-धीरे विभिन्न समाज और संस्कृति के लोग करीब आते हैं, उनमें एकता स्थापित होती है और देश मजबूत होता है.

भारत की संस्कृति पारिवारिक मूल्यों की संस्कृति है जिसमें हम देश को 'माँ' कहकर पुकारते हैं। इसलिए देश को एक सूत्र में पिरोकर रखने के लिए आवश्यक है कि हम भाषा के नाम पर न लड़ें और हिन्दी को पूरे देश को जोड़ने वाली सम्पर्क भाषा के रूप में सम्मान दें और इस प्रकार देश में एक परिवार का वातावरण बनाने में अपना योगदान दें।

कहानी: बेटा हो तो ऐसा

--श्रीमती बेला मनोज आगलावे

ज्योति और सूरज शर्मा का इकलौता बेटा था 'नयन'। नयन जो दृष्टिहीन पैदा हुआ था। सूरज पेशे से व्यवसायिक था और उसमें काफी सफलता भी प्राप्त कर चुका था। यूँ कहिए, वह एक सफल 'बिजनेस मैन' था। अपने प्रॉपर्टी के कारोबार में वह रायपुर के अमीरों में से एक था। कहने को तो वैसे सब कुछ था उसके पास। लेकिन फिर भी कुछ नहीं था। भगवान ने उसकी झोली में एक दु:ख डाला हुआ था, जिसे रोज देखकर वह अंदर ही अंदर रोता रहता। कुबेर जैसा पैसा उसके किसी काम नहीं आ रहा था। वह नयन के इलाज के लिए पानी की तरह पैसा बहा रहा था लेकिन, 12 साल की उम्र तक भी नयन को दृष्टि प्राप्त नहीं हो पाई थी।

अटूट आशा के साथ नयन की माँ ज्योति भगवान के चरणों में रोज पुष्प अर्पित करती थी और सूरज, बड़े-से बड़े डॉक्टर के पास जाने में कोई कसर नहीं छोड़ता था। दिक्कत यह थी कि, उन्हें कोई "नेत्र दाता" (Eye Donor) नहीं मिल पा रहा था जो नयन को अपनी आँखे दान कर सके। फिर भी, उन्होंने अपनी कोशिश जारी रखी। अपनी उम्मीद बनाए रखी कि एक-ना-एक दिन उन्हें अपने नयन के लिए "नेत्र दाता" मिल ही जाएगा।

और वह दिन आ भी गया। जब सूरज को डॉक्टर साहब ने बताया कि एक जवान, नक्सलियों के हमले में बुरी तरह घायल हुआ है। उसकी बचने की उम्मीद ना के बराबर है। उस जवान का एक बूढ़ा बाप है। उससे अगर बात कर सको तो शायद वह अपने बेटे के नेत्रदान के लिए तैयार हो जाए। डॉक्टर द्वारा बताए जाने पर सूरज बड़ी उम्मीद से उस बूढ़े बाबा के पास पहुँचा। ICU के बाहर अकेले बैठे बूढ़े बाबा को देखकर वहीं ठिठक गया। सेना के जवान के पिता के बारे में सूरज के मन कुछ अलग ही चित्र बना था। लेकिन सामने बैठे बूढ़े बाबा को देखकर वह सोच में पड़ गया कि वह बात कैसे करे।

फिर भी, बडी हिम्मत जुटाकर सूरज चार कदम आगे बढ़ाकर उन बाबा के पास जाकर बैठ गया। इसके पहले कि सूरज कुछ कह पाता, बाबा ने बड़े ही संयम स्वर में कहा। मेरा बेटा ''जावेद" सेना में जवान था। जावेद मेरा इकलौता बेटा। उसके सिवाय मेरा इस दुनिया में कोई नहीं। फिर भी उसने 'देश सेवा' को चुना और सेना में भर्ती हो गया। वह हमेशा कहता था, बाबा, देश की सेवा से बढ़कर कुछ नहीं। उसके साथ मैंने जितने दिन बिताए वह किसी जन्नत से कम नहीं और आज उसकी ये हालत है कि किसी भी समय वह हमेशा के लिए अपनी आँखें बंद कर लेगा। मैं चाहता हूँ कि आपके नयन को मेरे जावेद की आँखें दान करके, मैं मेरे जावेद को उसकी नजरों को, हमेशा के लिए जिंदा रखूँ। मुझे, इतना पढ़ना-लिखना तो आता नहीं। आप मुझे फॉरम लाकर दीजिए और कहाँ मेरे इस्ताक्षर करने हैं बताइए, मैं कर दूंगा।
अब तक ज्योति भी वहाँ पहुँच चुकी थी। ज्योति और सूरज दोनों बाबा के पैरों में गिर पड़े। तीनों की आँखों से आँसू बह रहे थे। अपने-अपने कारण से। सूरज ने कहा - बाबा आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हम जिंदगी

भर आपके शुक्रगुजार रहेंगे । आपका यह अहसान हम जिंदगी भर नहीं भूलेंगे । आप जो मांगेंगे, हम देंगे । "जावेद" का हम पर जिंदगी भर कर्ज रहेगा । बाबा ने कहा, मैं अपने गाँव में अल्लाह की खिदमत में खुश हूँ । मेरी बस इतनी ख्वाहिश है कि आप हर साल 30 सितंबर को नयन से मुझे मिलने देना । क्योंकि 30 सितंबर जावेद का जन्मदिन होता है । सूरज और ज्योति दोनों ने बाबा को वचन दिया । कुछ ही क्षणों बाद, जावेद ने हमेशा के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं ।

'नयन' को 'जावेद' की आँखें मिल चुकी थी । ऑपरेशन सफल रहा था । सूरज और ज्योति की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था । नयन भी दृष्टि पाकर बहुत प्रफुल्लित था । वह अपने माँ-बाप को सामने देख पा रहा था । उसने नयी दुनिया में कदम जो रखा था । सूरज और ज्योति ने सोच रखा था । ऑपरेशन के बाद, वे बाबा से मिलने जाएंगे । डॉक्टर से अनुमति मिलने के बाद वे सपरिवार बाबा से मिलने उनके गाँव की ओर निकल पड़े । सूरज और ज्योति के साथ नयन और उसके दादा-दादी तथा बुआ भी साथ हो लीं । रास्ते में, पेड़-पौधे, नदी पहाड़ देखकर नयन को बड़ा आनंद आ रहा था । वह बोल पड़ा, पापा, देखो तो पेड़ कैसे पीछे भाग रहे हैं । कार की खिड़की से ऊपर देखते हुए वह माँ से बोला, माँ, देखो तो बादल अपने साथ तेज दौड़ रहे हैं! नयन के लिए सब कुछ नया था । नयन की दादी बोली, "सूरज, हम पहले मंदिर जाएंगे । उनकी बात को सूरज ने मना नहीं किया । उसने कहा, "माँ, हम पहले मंदिर ही जा रहे हैं ।" और कुछ ही समय में, वे लोग, बाबा के घर के सामने थे ।

बाबा, जावेद के बाबा, सुबह की खुली ठंडी धूप सेंकते हुए, जावेद की फोटो देख रहे थे । "बाबा..... बच्चे की आवाज उन्हें सुनाई दी । सामने देखा तो नयन, सूरज, ज्योति सब उनके सामने थे । बाबा खुशी से फूले ना समाऐ । नयन की आँखों में, उन्हें उनका जावेद जो दिखाई दे रहा था । दोनों हाथ जोड़कर बाबा ने सूरज का शुक्रिया अदा किया । कहा, "मैं तो एक साल का इंतजार कर रहा था और आपने एक ही महीने में मुझे जावेद से रूबरू करा दिया । अल्लाह, नयन को बड़ी लम्बी उमर दे । सूरज ने कहा, "30 सितम्बर, अब नयन का जन्मदिन रहेगा क्योंकि उसें नया जन्म जो मिला है और वो हम सब आपके साथ ही मनाएंगे । हमारे साथ नयन की जिद थी कि वह आपसे मिलना चाहता था और इसलिए हम आपसे मिलने आए हैं, बाबा ।" बाबा की आँखें नम-सी हो गई ।

नयन की दादी, सूरज को हल्के-से गुस्से में बुदबुदाई, "मैंने तुम्हें पहले मंदिर चलने के लिए कहा था । और तुम यहाँ ले आये ! सूरज बोला, माँ, बाबा का घर मंदिर ही तो है । और बाबा, भगवान । माँ, तुम्हारे भगवान ने ही अपना दूत बनकर बाबा को और जावेद की आँखों को हमसे मिलवाया है । इसलिए पहले हमें भगवान रुपी इंसान से मिलना चाहिए ।" माँ को भी अपनी गलती का अहसास हुआ । बोली, सही कहा सूरज बेटा तुमने । मजहब चाहे कोई भी हो । अगर सच्ची श्रध्दा मन में है तो भगवान किसी भी रूप में सामने आ ही जाते हैं । बाबा, जावेद को पाकर और मैं तुम्हें पाकर धन्य हो गई ।"

सभी की आँखों में खुशी थी । आनंद विभोर सभी ने बाबा से अनुमति ली । बाबा ने ऊपर देखते हुए कहा, अल्लाह, तुमने मुझसे मेरा एक बेटा छीना था । लेकिन बदले में एक बेटा, एक पोता और एक परिवार दिया है । मेरा जावेद अमर रहेगा और मैं भी चैन की नींद सो सकूँगा ।

"नेत्र दान - सर्वश्रेष्ठ दान"

जवाहरलाल नेहरू पोर्ट की महानता

श्री आर. डी. सिंह,
सहायक उपनिरीक्षक,
कें.औ.सुरक्षा बल

जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।
विश्व में है ऊँचा नाम
छब्बीस मई उन्नीस सौ नवासी को हुआ है नवनिर्माण ।
जिला-रायगड, नवी-मुम्बई न्हावा शेवा नाम ।
जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।
जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।।1।।

चाचा नेहरू के नाम से खोला गया,
जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट प्राधिकरण का नाम ।
सभी कर्मचारी लगे हैं दिलोजान,
मानव जीवन अमूल्य है
सुरक्षित ढंग से काम करे ।
असुरक्षा हमेशा होती है शक्तिहीन,
बुद्धि, विवेक को कर देती है विहीन ।
सुरक्षा सफलता की कुंजी है ।
जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ही देश की मुख्य पूंजी है,
जिससे निकलता है मिलियन टनों का भार ।
अरब सागर के पूर्वी तट पर स्थित
राज्य महाराष्ट्र और पश्चिम भारत का नाम
जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।
जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।।2।।

जवाहरलाल नेहरू पोर्ट से ही होता है देश का कल्याण,
ग्राम न्हावा – शेवा की जनता वास्तव में है महान,
जवाहरलाल नेहरू पोर्ट के विकास में लगे हैं,
जे.एन.पी.ए. कर्मचारी एवं सी.आई.एस.एफ. जवान
जे.एन.पी.ए. पोर्ट की यही है महिमा,
सभी मिलकर जोर से बोलें ।
जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।
जय जय जवाहरलाल नेहरू पोर्ट महान ।।3।।

जय हिन्द । जय भारत ।

कंप्यूटर और सूचना तकनीक का दैनिक जीवन में प्रयोग

श्री प्रमोद पाटिल

आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर और सूचना तकनीक (आईटी) हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। पहले जहां कंप्यूटर का उपयोग केवल बड़े संगठनों, शोध संस्थानों और सरकारी कार्यालयों तक सीमित था, वहीं आज यह शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, बैंकिंग, मनोरंजन और संचार के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। सूचना तकनीक ने कार्य करने की पारंपरिक प्रणालियों को बदलकर उन्हें अधिक तेज, कुशल और प्रभावी बना दिया है। इस लेख में हम कंप्यूटर और सूचना तकनीक के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान को विस्तार से समझेंगे।

शिक्षा में कंप्यूटर और सूचना तकनीक का योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर और आईटी का व्यापक उपयोग हो रहा है। अब छात्र पारंपरिक कक्षाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से दुनिया भर के शिक्षकों और पाठ्यक्रमों तक पहुँच सकते हैं। डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे कि **BYJU'S, Unacademy और Coursera** ने छात्रों को कहीं से भी पढ़ाई करने की सुविधा प्रदान की है।

ऑनलाइन परीक्षा, स्मार्ट क्लासरूम और डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से शिक्षा अधिक आकर्षक और सुलभ बन गई है। छात्र विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी अब इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

व्यवसाय और कार्यस्थल पर सूचना तकनीक का प्रभाव :

कार्यालयों और व्यवसायों में कंप्यूटर और सूचना तकनीक का अत्यधिक उपयोग हो रहा है। पहले जहां फाइलों और दस्तावेजों को संग्रहित करने में बहुत समय, जगह और स्थान की आवश्यकता होती थी, वहीं अब **क्लाउड स्टोरेज** की मदद से बड़ी मात्रा में डेटा को सुरक्षित और व्यवस्थित रूप से संग्रहीत किया जा सकता है। ईमेल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से कंपनियाँ अपने ग्राहकों से बेहतर तरीके से जुड़ सकती हैं। **वर्क फ्रॉम होम** जैसी कार्य प्रणालियाँ संभव हो सकी हैं, जिससे कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ी है।

संचार में सूचना तकनीक की भूमिका:

संचार के क्षेत्र में कंप्यूटर और सूचना तकनीक ने क्रांति ला दी है । अब लोग दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से कुछ ही सेकंड में संपर्क कर सकते हैं । सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे **व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स** लोगों को आपस में जोड़ने का कार्य कर रहे हैं ।
ऑनलाइन मीटिंग ऐप्स जैसे **Zoom, Microsoft Teams और Google Meet** के माध्यम से लोग दूर रहकर भी अपने कार्यों को बहुत ही खूबसूरती के साथ संचालित कर सकते हैं ।

स्वास्थ्य सेवाओं में कंप्यूटर और आईटी का योगदान:

कंप्यूटर और सूचना तकनीक ने स्वास्थ्य सेवाओं को भी अत्यधिक उन्नत बना दिया है । **टेलीमेडिसिन** के माध्यम से डॉक्टर अब दूरस्थ क्षेत्रों के मरीजों को ऑनलाइन परामर्श दे सकते हैं । डिजिटल मेडिकल रिकॉर्ड्स, ऑनलाइन दवा खरीदने की सुविधा और स्वास्थ्य निगरानी ऐप्स के कारण चिकित्सा क्षेत्र अधिक सुलभ और प्रभावी हो गया है।

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में सूचना तकनीक का उपयोग:

बैंकिंग सेक्टर में कंप्यूटर और आईटी का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है । अब लोग **नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई पेमेंट और डिजिटल वॉलेट** के माध्यम से पैसों का लेन-देन कर सकते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है, बल्कि सुरक्षा भी बढ़ जाती है । ऑनलाइन लेन-देन ने व्यापार को भी आसान बना दिया है । ई-कॉमर्स वेबसाइटों जैसे **Amazon, Flipkart और मिंत्रा** के माध्यम से लोग घर बैठे शॉपिंग कर सकते हैं ।

मनोरंजन और मीडिया में सूचना तकनीक का प्रभाव

मनोरंजन के क्षेत्र में कंप्यूटर और सूचना तकनीक ने नए आयामं स्थापित किए हैं। पहले लोग टीवी और रेडियो पर निर्भर रहते थे, लेकिन अब वे **Netflix, Amazon Prime, JioHotstar और YouTube** जैसी स्ट्रीमिंग सेवाओं का उपयोग कर अपनी पसंदीदा मूवी और वेब सीरीज देख सकते हैं ।
ऑनलाइन गेमिंग, डिजिटल संगीत और ई-बुक्स ने मनोरंजन के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है ।

सरकारी सेवाओं में सूचना तकनीक का योगदान.

सरकार भी डिजिटल सेवाओं को बढ़ावा दे रही है, जिससे नागरिकों को विभिन्न योजनाओं का लाभ आसानी से मिल सके। अब लोग **आधार कार्ड, पैन कार्ड, पासपोर्ट आवेदन और रेलवे टिकट बुकिंग** जैसी सेवाओं का लाभ ऑनलाइन ले सकते हैं।
डिजिटल इंडिया पहल के तहत कई सरकारी कार्यों को ऑनलाइन किया गया है, जिससे पारदर्शिता और दक्षता बढ़ी है।

कृषि और ग्रामीण विकास में सूचना तकनीक का उपयोग :

कृषि क्षेत्र में भी सूचना तकनीक का उपयोग बढ़ रहा है। किसान अब मोबाइल ऐप्स और इंटरनेट के माध्यम से **मौसम की जानकारी, बीजों के प्रकार, उर्वरकों** (fertiliser) **के उपयोग और बाजार भाव** जैसी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। इससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हो रही है और किसानों को अधिक लाभ मिल रहा है।

साइबर सुरक्षा और गोपनीयता :

जहाँ सूचना तकनीक के अनेक लाभ हैं, वहीं इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं। **साइबर अपराध, डेटा चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी** जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि लोग **साइबर सुरक्षा उपायों** को अपनाएँ, जैसे **मजबूत पासवर्ड का उपयोग, एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर इंस्टॉल करना और सुरक्षित वेबसाइटों से ही लेन-देन करना**।

निष्कर्ष :

कंप्यूटर और सूचना तकनीक ने हमारे जीवन को अत्यधिक सरल, तेज और सुविधाजनक बना दिया है। इसके बिना आज के युग में काम करने की कल्पना करना भी मुश्किल है। हालाँकि, इसका सही और सुरक्षित उपयोग करना आवश्यक है, ताकि हम इसके सभी फायदों का लाभ उठा सकें और किसी भी प्रकार की डिजिटल धोखाधड़ी से बच सकें।

भविष्य में कंप्यूटर और सूचना तकनीक और अधिक उन्नत होंगे, जिससे मानव जीवन को और अधिक आसान और प्रभावी बनाया जा सकेगा।

हिन्दी पखवाड़ा - 2024 की प्रमुख झलकियाँ

हमारे पत्तन के अध्यक्ष श्री उन्मेष शरद वाघ द्वारा पखवाड़े का शुभारम्भ

पखवाड़े के शुभारम्भ दिवस पर हमारे अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रेरक सम्बोधन

हिन्दी पखवाड़ा - 2024 की प्रमुख झलकियाँ

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

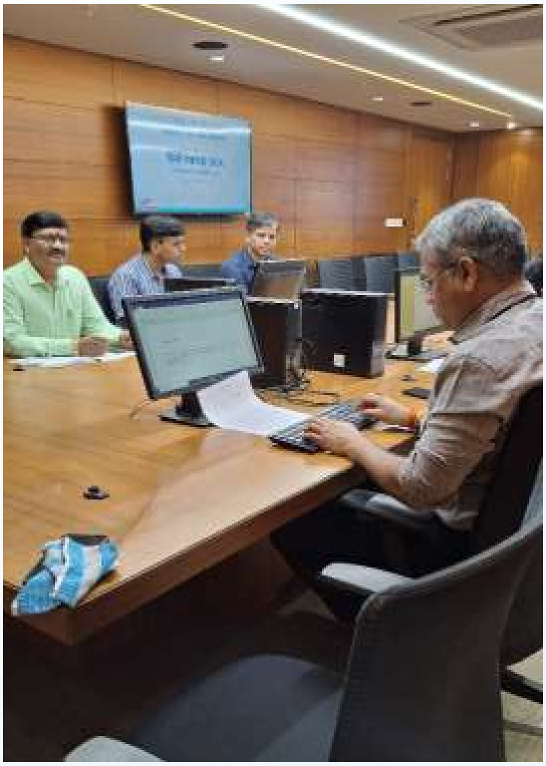

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी पखवाड़ा - 2024 की प्रमुख झलकियाँ

हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी शब्दावली एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता

हिन्दी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का अयोजन

हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन

हिन्दी पखवाड़ा 2024

(क) विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

क्र.सं	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार	विजेताओं के नाम	पदनाम	कर्म. सं.	विभाग
01	हिन्दी पत्र लेखन तथा शब्दावली प्रतियोगिता	पहला	श्री धनंजय गावडे	उप प्रबंधक	10505	यातायात
		दूसरा	श्री मधुकर शां. कोली	वरिष्ठ सहायक	10358	प्रशासन
		तीसरा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	10716	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्रीमती अनिता ठाकूर	वरिष्ठ सहायक	10206	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री ललित लक्ष्मीकांत पाटील	कनिष्ठ सहायक	12372	वित्त
		प्रेरणा	श्रीमती रती मदन जठार	आशुलिपिक	12314	वित्त
02	हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता	पहला	श्री मधुकर एस. कोली	वरिष्ठ सहायक	10358	प्रशासन
		दूसरा	श्री प्रकाश चंद्रकांत नाईक	जाँचकर्ता	10204	प्रशासन
		तीसरा	श्रीमती नीलम केलकर	मेट्रन	11978	अस्पताल
		संयुक्त विजेता (प्रेरणा)	डॉ. मिलिंद भोसकर	वरि. चिकित्सा. अधि.	12318	अस्पताल
		प्रेरणा	श्रीमती अनुजा ए. पाटील	आशुलिपिक	11630	वित्त
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	10716	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री सत्येन्द्र प्रताप सिंह	प्रबंधक	11764	यां. एवं वि. अभि.
03	हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता	पहला	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	12035	प्रशासन
		दूसरा	श्रीमती रती मदन जठार	आशुलिपिक	12314	वित्त
		तीसरा	श्रीमती वंदना ठाकूर	तंत्रज्ञ	11738	अस्पताल
		संयुक्त विजेता (प्रेरणा)	डॉ. मिलिंद भोसकर	व. चिकित्सा. अधि.	12318	अस्पताल
		प्रेरणा	श्रीमती स्मिता एस. शेट्ये	स्टाफ नर्स	12303	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	10716	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री दिलीप काशीनाथ कदम	अभियंता	11038	यातायात
04	हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता	पहला	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	12124	अस्पताल
		दूसरा	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	12035	प्रशासन
		तीसरा	डॉ. मिलिंद भोसकर	व. चिकित्सा अधि.	12318	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री भरत मढवी	वरिष्ठ प्रबंधक	10086	प्रशासन
		संयुक्त विजेता (प्रेरणा)	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	10716	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्रीमती नीलम केलकर	मेट्रन	11978	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री मधुकर एस. कोली	वरिष्ठ सहायक	10358	प्रशासन
05	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (अन्य वर्ग)	**संयुक्त विजेता (प्रथम)**	श्री मधुकर एस. कोली	वरिष्ठ सहायक	10358	प्रशासन
		पहला	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	12124	अस्पताल
		दूसरा	श्रीमती जयश्री प्रशांत पाठारे	वरिष्ठ सहायक	10918	प्रशासन
		तीसरा	श्री नंदकुमार यशवंत कडू	लिपिक	11824	यातायात
		प्रेरणा	श्री प्रदीप अनंत ठाकूर	वरि. सहायक	10370	प्रशासन
		प्रेरणा	श्रीमती मनीषा कामत	लिपिक	12247	पयोवि
		प्रेरणा	श्री प्रकाश चंद्रकांत नाईक	जाँचकर्ता	10204	प्रशासन

06	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (आशुलिपिक वर्ग)	पहला	श्रीमती वैजयंती के. तांबोली	निजी सहायक	10741	यातायात
		दूसरा	श्रीमती अनुजा ए. पाटील	आशुलिपिक	11630	वित्त
		तीसरा	श्रीमती प्राजक्ता पराग म्हात्रे	आशुलिपिक	12308	प्रशासन
		प्रेरणा	श्रीमती स्वाती निलेश पाटील	आशुलिपिक	12309	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री अनिल बाबू चिर्लेकर	आशुलिपिक	11414	प्रापण
		प्रेरणा	श्रीमती दीप्ति संतोष जगे	आशुलिपिक	11632	वित्त
07	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (प्रबंधक एवं उच्च वर्ग)	पहला	डॉ. मिलिंद भोसकर	व. चिकित्सा अधि.	12318	वित्त
		दूसरा	श्री भरत मढवी	वरिष्ठ प्रबंधक	10086	प्रशासन
		तीसरा	श्री बाळासाहेब निकम	प्रबंधक	10539	सतर्कता
		प्रेरणा	श्री नोहरलाल घोरमारे	प्रबंधक	12345	प्रबंधन सेवा
		प्रेरणा	श्री कल्पेश जैन	प्रबंधक	12462	वित्त
		प्रेरणा	श्री रविंद्र महाडीक	प्रबंधक	10607	यातायात
08	श्रुत लेखन प्रतियोगिता	पहला	श्रीमती नीलम केलकर	मेट्रन	11978	अस्पताल
		दूसरा	श्रीमती बेला आगलावे	वरिष्ठ सहायक	12035	प्रशासन
		तीसरा	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	12124	अस्पताल
		प्रेरणा	सुश्री राजश्री दाबके	महाप्रबंधक	12464	वित्त
		प्रेरणा	श्री प्रकाश चन्द्र प्रजापति	उप महाप्रबंधक	12461	वित्त
		संयुक्त विजेता (प्रेरणा)	श्री संतोष भिवा परब	सहायक प्रबंधक	10716	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री अनिता प्रदीप ठाकुर	वरिष्ठ सहायक	10206	यां. एवं वि. अभि.
09	हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता	पहला	श्री प्रकाश नाईक	जाँचकर्ता	10204	प्रशासन
		दूसरा	श्रीमती रती मदन जठार	आशुलिपिक	12314	वित्त
		तीसरा	श्री संदीप नारायण घरत	लिपिक	11996	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री संतोष तारे	सहायक प्रबंधक	10328	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री सुनिल दुलंगे	सहायक प्रबंधक	10604	जनेप सेझ
		प्रेरणा	श्री जनार्दन जगन्नाथ घरत	जाँचकर्ता	11815	समुद्री
10	हिन्दी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता	पहला	श्री मनोहर गुजेला	सहायक प्रबंधक	10595	यातायात
		पहला	श्री दिलीप कदम	अभियंता	11038	यातायात
		दूसरा	डॉ. मिलिंद भोसकर	व. चिकित्सा अधि.	12318	अस्पताल
		दूसरा	श्रीमती अंजली भोसकर	आश्रित	12318	अस्पताल
		तीसरा	श्री महेश जाधव	चेकर	12348	यातायात
		तीसरा	श्रीमती वंदना ठाकूर	तंत्रज्ञ	11738	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री संदीप मुकुंद घरत	लिपिक	12124	अस्पताल
		प्रेरणा	श्रीमती अनिता ठाकूर	वरिष्ठ सहायक	10206	यां. एवं वि. अभि.
		प्रेरणा	श्री प्रदीप पाटील	कार्या. अधी.	11028	समुद्री
		प्रेरणा	श्रीमती निर्मला रविंद्र पाटील	आश्रित	10950	प्रशासन
		प्रेरणा	श्री गणेश ठाकूर	लिपक	12117	यातायात
		प्रेरणा	श्रीमती नमीता उपाध्ये	परिचारिका	11881	अस्पताल
11	हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता	पहला	श्रीमती पुष्पलता धनावडे	लिपिक	12289	वित्त
		दूसरा	श्री प्रमोद पवार	तकनीशियन	11724	यां. एवं वि. अभि.
		तीसरा	श्री उत्तम कुमार कडवे	तकनीशियन	12075	यातायात
		संयुक्त विजेता (प्रेरणा)	डॉ. मिलिंद भोसकर	व. चिकित्सा अधि.	12318	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री राजेश तोडणकर	लिपिक	12221	वित्त
		प्रेरणा	श्रीमती जोत्सना मोकल	प्र. परिचारिका	11830	अस्पताल
		प्रेरणा	श्री महेश जाधव	चेकर	12348	यातायात

(ख) वर्ष 2023-24 में राजभाषा निष्पादन में सहयोग करने वाले पुरस्कृत हिन्दी सम्पर्क अधिकारियों की सूची :

क्र.सं.	सम्पर्क अधिकारी का नाम		क्रं.सं	सम्पर्क अधिकारी का नाम
01	श्री विश्वनाथ घरत, उप महाप्रबंधक (पयोवि)		06	श्री संजय सक्सेना, प्रबंधक (अग्नि तथा सुरक्षा)
02	श्री भरत मढवी, प्रबंधक (यातायात)		07	श्री नोहरलाल घोरमारे, प्रबंधक (प्रबंधन सेवा)
03	श्री सागर गुरव, प्रबंधक (प्रशासन)		08	डॉ. मिलिंद भोसकर, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी
04	श्री एस. पी. सिंह, प्रबंधक (उप. सेवाएँ)		09	श्री महादेव घरत, उप प्रबंधक (वित्त)
05	श्री स्वप्निल पोकुलवार, प्रबंधक (सतर्कता)			

(ग) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पुरस्कार :

01) हिंदी कहानी/कथा लेखन प्रतियोगिता	**तृतीय पुरस्कार**	**-**	**डॉ मिलिंद भोसकर**
02) हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता	**प्रेरणा पुरस्कार**	**-**	**श्रीमती बेला आगलावे**

डा. मिलिन्द भोस्कर और श्रीमती बेला मनोज आगलावे को नराकास, नवी मुंबई द्वारा हिन्दी प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत किये जाने पर उन्हें हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाऐं ।

शब्दकोश

इस गृह पत्रिका के 37वें अंक में प्रकाशित शब्दकोश को पत्तन के कार्मिकों एवं अधिकारियों द्वारा काफी सराहा गया। उसी शब्दकोश को और अधिक शब्दों के साथ संविर्धत करते हुए पत्तन के हिन्दी अनुभाग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुति की है। निश्चय ही, पत्तन में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में यह शब्दावली सहायक होगी।

TRANSSHIPMENT	यानांतरण
GREEN PORT	हरित पत्तन
ENVIRONMENT FRIENDLY PORT	पर्यावरण हितैषी पत्तन
MARITIME	समुद्री
BARGE	आपूर्ति नौका (बार्ज)
TOWING	नौकर्षण
TURN AROUND TIME	घुमाव समय (जलयानों के आवागमन के संदर्भ में)
DOCK MASTER	गोदी अधिपति
SAILING	नौकायन/समुद्र यात्रा
CONCESSION AGREEMENT	छूट करार
CONCESSIONAIRE	रियायतग्राही
LANDLORD PORT	भूस्वामी पत्तन
OPERATING EXPENDITURE	प्रचालनीय व्यय
OPERATING INCOME	प्रचालनीय आय
PORT AFFECTED PERSON (PAP)	परियोजना प्रभावित व्यक्ति
PORT OPERATION CENTRE (POC)	पत्तन प्रचालन केंद्र
SURVEY	सर्वेक्षण
TENDER-CUM-AUCTION METHODOLOGY	निविदा-सह-नीलामी कार्यप्रणाली
TRAFFIC	यातायात
ARTICLES OF ASSOCIATION	संस्था के अंतर्नियम
BARTER	वस्तु विनिमय
BASIC PAY	मूल वेतन
CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE (CISF)	केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल
CONTAINER FREIGHT STATION (CFS)	कंटेनर वहन स्थानक
CUSTOMS	सीमा शुल्क
DOCUMENTATION	प्रलेखन
EASE OF DOING BUSINESS	व्यापार करने में आसानी
ENVIRONMENTAL CLEARANCE	पर्यावरणीय मंजूरी
ESTIMATED COST	प्राक्कलित लागत
FINANCIAL YEAR	वित्तीय वर्ष

FOOD PROCESSING	खाद्य प्रसंस्करण
FREIGHT	माल, भाड़ा
INFRASTRUCTURE	अवसंरचना, बुनियादी ढांचा
MARKETING	विपणन
PATRONAGE	संरक्षण
TRAINING CENTRE	प्रशिक्षण केन्द्र
OPERATING PROFIT	प्रचालनीय लाभ
INNOVATION	नवाचार
OBLIGATORY	अनिवार्य
EMOLUMENTS	परिलब्धियाँ
SUPERANNUATION	अधिवर्षिता

नराकास की छमाही बैठक में हमारे पत्तन के महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव, श्रीमती मनिषा जाधव द्वारा पुरस्कार ग्रहण किया गया।

- श्री मधुकर कोली

कविता – कमाई

तूने जो कमाया है, वो दूसरा ही खायेगा,
खाली हाथ आया है, खाली हाथ जायेगा ।।

ये दुनिया तो एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर,
कोई हंस-हंस के जीता है, कोई जीता है रो रोकर ।

पैसों की खातिर करता मिलावट,
नेकी और नीति को कैसा भूल गया ।

तूने जो कमाया है, वो दूसरा ही खायेगा,
खाली हाथ आया है, खाली हाथ जायेगा ।।

मुश्किलों से संभल जाए उसे इन्सान कहते हैं,
किसी के काम जो आये, उसे अच्छा इन्सान कहते हैं ।

जब हम पैदा हुए जग हँसा, हम रोये
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोये ।

तूने जो कमाया है, वो दूसरा ही खायेगा,
खाली हाथ आया है, खाली हाथ जायेगा ।।

मानव जन्म का उद्देश्य जानने की जिज्ञासा करो,
सच्चाई, प्यार से जियो और जन्म देने वाले का गुणगान करो ।

मानव जन्म मिला है प्यारे, अच्छे कर्म कर पाएगा
नहीं तो पशु और तुझ में क्या फर्क रह जाएगा ।

तूने जो कमाया है, वो दूसरा ही खायेगा,
खाली हाथ आया है, खाली हाथ जायेगा ।।

जब तक मुफ्त में खाना-पीना बाँटेगा खास,
बिन बुलाई भारी भीड़ जमा होगी तेरे आस-पास ।

जब तक ये साँस है, तब तक ये रिश्ता है
साँस रुक जाएगी, तो रिश्ता छूट जाएगा ।

तूने जो कमाया है, वो दूसरा ही खायेगा,
खाली हाथ आया है, खाली हाथ जायेगा ।।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण में स्वच्छ भारत अभियान - 2024 की कुछ गतिविधियाँ

"एक पेड़ माँ के नाम" योजना के अन्तर्गत पौधा वितरण

स्वच्छ भारत अभियान पर आधारित पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन

पर्यावरण हितैषी (सड़नशील) कैरी बैग्स का विपणन केन्द्र (शॉपिंग कॉम्प्लेक्स) में वितरण

हिन्दी पखवाड़ा - 2024 की पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह की प्रमुख झलकियाँ